वर्ष : ३४

अंक : ०४

तित्थयर

मूल्य : १०.०० रूपये

जुलाई २०१०

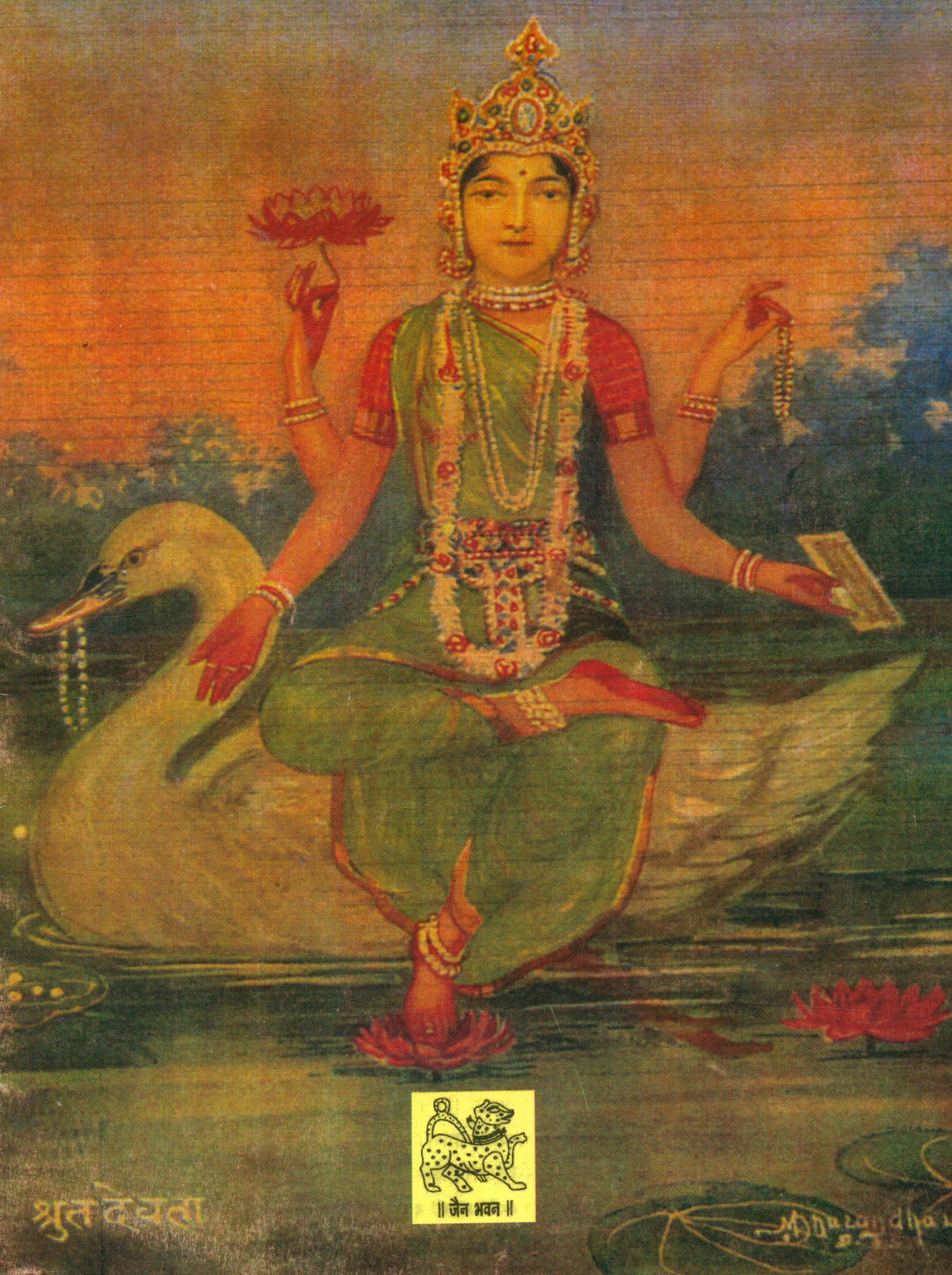

Courtesy :

मनुष्य कर्म से ब्राह्मण, कर्म से क्षत्रिय,
कर्म से ही वैश्य और कर्म से ही शूद्र होता है।

卐

कमल सिंह करनावट — अध्यक्ष

विनोद चंद बोथरा — कोषाध्यक्ष

गौतम दूगड़ — सचिव

जैन भवन

पी-२५, कलाकार स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ००७
फोन नं. : २२६८-२६५५, २२७२-९०२८
E-mail : jainbhawan@bsnl.in

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३४ | अंक - ०४ जुलाई | २०१०

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका सें सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिय

पता - **Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007**

Phone : 2268-2655, 2272-9028,

Email : jainbhawan@bsnl.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें --

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Life Membership : India : Rs. 2000.00,

Published by Dr. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. उड़ीसा	डॉ. लता बोथरा	१३७
३. हरिश्चन्द्र-तारा		१५७

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

उड़ीसा :

हाथीगुंफा के शिलालेख में श्री जायसवालजी के वाचन के अनुसार अंगशास्त्रों के उद्धार से सम्बन्धित केवल इतना ही उल्लेख है कि– मौर्यकाल में विच्छिन्न हुए ६४ अध्याय वाले अंगसप्तिका का चौथा भाग फिर से तैयार करवाया।

मुरियकाले वोछिंने च चोयठिसतिकंतरिये उपादयति,

हिमवन्त स्थविरावली में अंग-शास्त्रों के उद्धार के सम्बन्ध में स्पष्ट उल्लेख के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि कुमारगिरि पर खारवेल द्वारा आयोजित उस चतुर्विध संघ के सम्मेलन में किन-किन श्रमणों, श्रमणियों, श्रावकों और श्राविकाओं ने भाग लिया तथा खारवेल की प्रार्थना पर श्रमणों ने अवशिष्ठ जिन प्रवचन को भोजपत्र, ताड़पत्र आदि पर लिखा।

स्थविरावली के अनुसार– आर्य बलिस्सह आदि जिनकल्पियों की तुलना करने वाले २०० श्रमणों, आर्यसुस्थित आदि ३०० स्थविरकल्पी साधुओं, आर्या पोइणी आदि ३०० श्रमणियों, भिक्षुराज, सीवंद, चूर्णक, सेलक आदि ७०० श्रावकों और पुंर्णमित्रा (खारवेल की अग्रमहिषी) आदि ७०० श्राविकाओं ने कुमारगिरि पर हुए उस सम्मेलन में भाग लिया। भिक्षुराय की प्रार्थना पर उन स्थविर श्रमणों एवं श्रमणियों ने अवशिष्ट जिनप्रवचन को सर्वसम्मत स्वरूप में भोजपत्र, ताड़पत्र वल्कल आदि पर लिखा और इस प्रकार वे सुधर्मा द्वारा उपदिष्ट द्वादशांगी के रक्षक बने।

बौद्धों के ग्रन्थ दिव्यावदान में पुष्यामित्र द्वारा किये गये अत्याचारों का विवरण मिलता है। उसने सिर्फ बौद्धों पर नहीं जैनियों पर भी

अत्याचार किये। शिलालेख में खारवेल के लिये **वेनाभिविजयां** शब्द मिलता है जिसका अर्थ विद्वानों के अनुसार खारवेल को गरुड़ की तरह प्रबल वेग से शत्रुओं पर आक्रमण कर विजय प्राप्त करने वाला बताया गया है।

इस शिलालेख की सातवीं तथा आठवीं पक्ति में लिखा है खारवेल अपने राज्य के आठवें वर्ष में एक बहुत बड़ी सेना के साथ गोरखगिरि पर कब्जा कर राजगृह को घेर लिया था। खारवेल के शौर्य के भय से यवन राज डिमिट्रियस मथुरा का घेरा उठाकर अपने देश वापिस लौट गया। इसके बाद मगध पर दूसरा आक्रमण अपने राज्य के बारहवें वर्ष में किया। और मगधपति पुष्यमित्र को पराजित कर कलिंग जिन मूर्ति को जिसे नंदराजा कलिंग से पाटलीपुत्र में लाये थे उनको पुनः कलिंग में ले जाकर स्थापित किया। शिलालेख और स्थविरावली दोनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि खारवेल ने उत्तरापथ से दक्षिणापथ तक अपना राज्य और प्रभुत्व का विस्तार किया। खारवेल के शिलालेख में मगधपति का नाम वृहस्पतिमित्र दिया हुआ है जो पुष्यामित्र का नाम था। जिसकी पुष्टि पुराणों और प्राचीन सिक्कों से होती है। इसका स्पष्टीकरण हिमवंतस्थविरावली से भी होता है जिसके अनुसार खारवेल ने मगधपति पुष्यामित्र को युद्ध में पराजित कर अपना आज्ञानुवर्ती बनाया था।

एसो णं भिक्खुरायो अईव परक्कमजुओ गयाइसेणाक्कंतमहियलमंडलो मगहाहियं पुष्फमित्तं णिवं अहिणिक्खित्ता णियाणम्मि ठाइत्ता . . . (हिमवंत स्थविरावली।)

खुला जिले में एक पहाड़ी भुवनेश्वर से ३ मील उत्तर में है। यह पर्वत तीन विभागों में विभाजित है। खण्डगिरि, उदयगिरि और नीलगिरि। खण्डगिरि १२३ फुट ऊंचा तथा उदयगिरि ११० फुट ऊंचा

है। मुख्य गुफायें उदयगिरि में ४४, खण्डगिरि में १९ तथा नीलगिरि में ३ हैं। इनके अलावा अनेकों छोटी-छोटी गुफाएं भी हैं। इन गुफाओं को पहले बौद्ध गुफाएं माना जाता रहा था लेकिन हाथीगुंफा शिलालेख को पढ़ने के बाद यह तथ्य सामने आया कि ये बौद्ध नहीं जैन गुफाएं है। फरग्यूसन ने इस विषय में लिखा है कि– The Orissa caves have already been referred to, as they were long mistaken as a group of Buddhist excavation. They are probably as old as anything of the kind in India and, unless some of the Bihar excavation were Jaina, they are the earliest caves of the sect. The oldest and most numerous are in the hill on the east called Udayagiri.

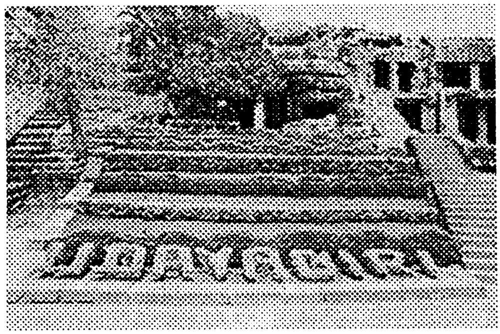

उदयगिरि

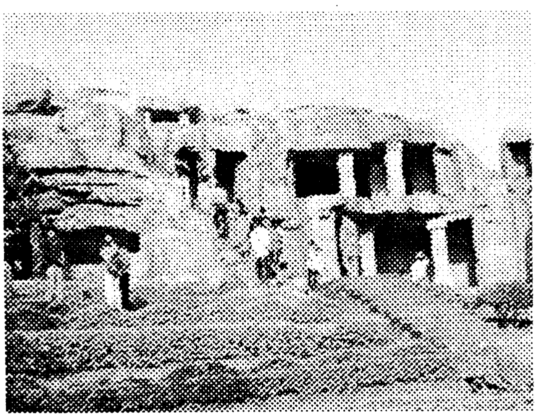

Udayagiri & Khandagiri Caves

उदयगिरि- उदयगिरि में जितनी गुफाएं है उनमें से सबसे बड़ी और सबसे उत्तम चित्रकारी से चित्रित **रानी हन्सपुरी गुफा** है। इस गुफा में बहुत से दृश्य अंकित हैं जिनमें कुछ

नष्ट भी हो गये है फिर भी कुछ दृश्यों में स्पष्ट रूप से एक साधु की यात्रा को दिखलाते हैं जो धार्मिक उत्सव में नगर के भीतर चल रहे हैं लोग अपने घरों से उनका दर्शन कर रहे हैं। घोड़े जा रहे हैं, हाथी चल रहे हैं, प्यादे जा रहे हैं तथा स्त्री पुरुष हाथ जोड़े हुए साधु के पीछे जा रहे हैं। कहीं-कहीं खड़े हुए लोग झुक जाते हैं और फलादि चढ़ाते हैं तथा आशीर्वाद ले रहे हैं।

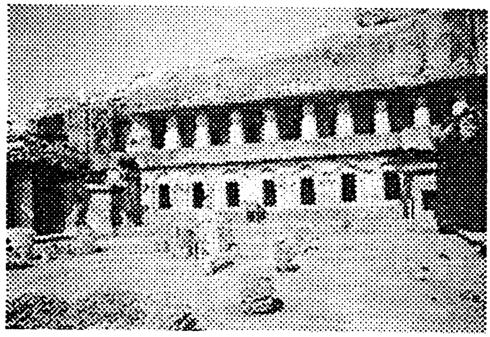

रानीगुम्फा (गुफा नं. - १) उदयगिरि

The largest and the most beautiful, Cave 1. **Rani Gumpha** or **Queen's Cave,** off the plain path to the right is double storeyed. Excavated on three sides of a quadrangle with fine wall friezes and some recently restored pillars, not exactly architectural marvel, but has some beautiful sculptures.

The right wing of the lower storey consists of a single cell with three entrances and a pillared varandah. On the walls, flanking the terminal pilasters of entrances to the cell are embellished with side pilasters crowned by animals. Over them there are toranas (arches) relieved with religious and royal scenes-couple standing reverentially with folded hands, a female dancer with accompanying female musicians, etc.

The main central wing, consisting of four cells, has themes

apparently indicating victory march of a king, starting from his capital and returning back after passing through various lands. At the angles, where the right and left wings meet, are two small guard rooms which are lavishly decorated-springs cascading down the hills, fruits laden trees, wild animals, sporting elephants in lotus pools, etc.

इस पर्वत में श्रीपार्श्वनाथ स्वामी बहुत अधिक प्रतिष्ठित है इस प्रकार अन्य दूसरी गुफाएं है। जयविजयगुफा, छोटीहाथीगुफा, अलकापुरीगुफा, मच्छपुरीगुफा, पनसगुफा, पातालपुरीगुफा, बाघ गुफा और गणेश गुफा आदि।

मंचपुरी गुफा के ५ दरवाजे हैं– चौथे द्वार पर एक लाइन का शिलालेख है जो इस भांति है–

ऐरस महाराजस कलिङ्गाधिपतिनो महामेघवाहन सकूड़े पसीरिनोघलेनम्

अर्थात् चतुर महाराज कलिंग देश के स्वामी महामेघवाहन या कूड़े पसीरी की गुफा।

इस गुफा के सातवें कमरे में दूसरा लेख है जो इस भांति है-

खण्डगिरि

कुमार वदुरवस लेनम् (यह लेख पहले से प्राचीन है) अर्थात् कुमार वदुरव की गुफा- शायद यह कुमार राजा खारवेल के पुत्र हो।

इस मञ्चपुरी गुफा में ऊपर के खाने में तीसरा लेख है सो इस तरह का है—

अरहन्त पसादायम् कलिङ्गानम् समनानम्लेनं कारितम् राज्ञोलालकस।

हथी साहस पपोतस् धुतुनाकलिंग चक्रवर्तितो श्री खारबेलस।

अग महिसिना कारितम् (यह लेख हाथी गुफा के लेख से कुछ ही पीछे का है।)

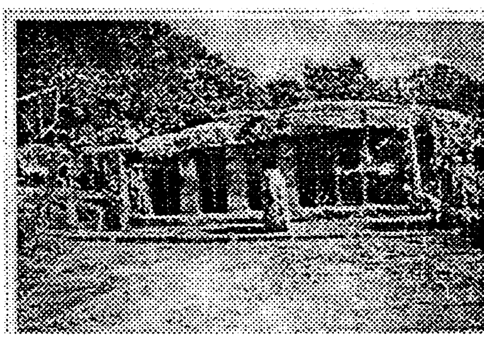

Ganeshagumpha (cave no.-10) Udayagiri

अर्थात् यह श्रीअरहन्त के प्रासाद या मंदिर रूप गुफा कलिंग देश के श्रमणों के लिये बनाई गई है-- यह गुफा कलिंग चक्रवर्ती राजा खारबेल की मुख्य पटरानी द्वारा कराई गई जो राजा लालकस की पुत्री थी। यह लालकस, राजा हथीसहस् के पौत्र थे। इसको स्वर्गपुरी गुफा भी कहते हैं।

"By the blessings of Arhats the chief queen of Kharavela, the Cakravarti monarch of Kalinga, the great granddaughter of Hathisiha (Hasti Simha) and the daughter of Lalaka or Lalarka caused to be excavated the cave for the sramanas of Kalinga."

Manchapuri and **Swargapuri** up the hill and around to right house a damaged relief, the subject of which is worship of some Jain religious symbol. The assemblage on the right is a

group of four, votaries with folded hands, dressed in long dhotis, scarves and heavy kundalas (ear rings).

गणेशगुफा- यहाँ भी कुछ दृश्य हैं कहा जाता है कि ये श्री पार्श्वनाथ स्वामी के चरित्र से सम्बन्ध रखते हैं।

"**Ganesh Gumpha,** about 50 m from the top of the steps takes its name from the figure of Ganesh carved on the back of its right cell. The carvings tell the story of the elopement of Bassavadatta, Princess of Ujjayini, with King Udayan of Kausambi in the company of Vasantaka. Proceeding to the top of the Udayagiri Hill by a pathway to right, the visitor will reach the ruins of an apsidal structure, unearthed in 1958. This Chaitya hall was the place of worship by the monks and in all probability once housed the legendary Kalinga-Jina that Kharavel recovered after it had been removed by Nanda king of Magadha."

सर्पगुफा- यह भी अत्यन्त प्राचीन गुफा है जिसमें एक प्राचीन शिलालेख है जो दो लाइन का है। **कम्मस हलरिन, २. णय च पसादो।** अर्थात् कम्म और हलरिवन का प्रासाद।

"Close to the Hathi gumpha is a small cave, known as Sarpa, the whole fronton of which over the doorway is occupied by a great three-headed Naga, and may be as old as the Hathi cave. The inscription on it merely says that it is "the unequalled chamber of Chulakama," who seems also to have excavated another cave here, to the west of the Hathi gumpha, called Haridasa--- a long room with three doorways behind a verandah."

इसी सर्पगुफा द्वार पर बड़ी हाथीगुफा के पास एक शिलालेख है–**चूलसमय को था जे गाय** चूल कर्मन् का अजेय कोठा।

This inscription consisting of one line, is incised over the doorway of the sarpagumpha.

बाघगुफा- इस पर भी दूसरी शताब्दी का शिलालेख है जिनकी दो पंक्तियां इस प्रकार है– **नगरअरंबदस, २. सभूतनोलेनम्**- अर्थात् नगरजसभूति की गुफा।

"One other cave here---the Bagh-gumpha---deserves to be mentioned. It is a great boulder, carved into the resemblance of a tiger's head, with his jaws open, and his throat, as it should be, is a doorway leading to a single cell about 6 ft. 4 in. deep, by 7 to 9 ft. wide (Woodcut No. 272). It is a caprice, but one that shows that those who conceived it had some experience in the plastic arts before they undertook it. The door jambs slope inwards slightly, and the pilasters on each side have winged elephants on the capitals and vase-shaped bases. From the form of the characters also which are engraved upon it, it is undoubtedly anterior to the Christian Era, but how much earlier it is difficult to say."

हरिदासगुफा- इस पर एक शिलालेख इस भांति है– और ई० सं० पहली शताब्दी पूर्व का– **चूलकुमसपसातोकथाजेयाच।** अर्थात् चूलकुम का प्रासाद और अजेय कोठा।

This inscription contains one line has been incised over one of the three entrances to the main chamber of the cave from the veranda.

जंबेश्वरगुफा- यहाँ एक शिलालेख मञ्चपुरी गुफा के समय का जो लेख ब्राह्मणी अक्षरों में है। **महामदास वारियाय ना कियस लेनम्** अर्थात् महामद की स्त्री नाकियस की गुंफा।

This inscription has been engraved over the entrances to the inner chamber of the cave.

छोटीहाथीगुफा-- इस पर भी एक लेख हैं। **अगरिच............सलेनम्।**

Chota Hathi Gumpha, or small Elephant Cave, is notable for its facade having masterly carving of six vigorous elephants flanking its entrance. Cave 4, **Alakapuri Gumpha,** contain sculptures of a lion holding a prey, in its mouth, and pillars topped by pairs of winged animals, some human and some bird headed. Cave 5. **Jaya Vijaya Gumpha,** is double storeyed and a bodhi tree is carved in the central apartment. The high sanctity of the tree is represented by an umbrella over it and being worshipped by a couple on either side.

खण्डगिरि :

तत्त्वगुफा नं० १- इसमें चित्र है तथा इसपर शिलालेख हैं- जो पहली शताब्दी पूर्व का है।

तत्त्वगुफा नं० २- पद मुलिकस कुसु मास लेनम् कुसुम सेवक की गुफा, खण्डगिरि के लेखों में यह सबसे प्राचीन लेख है।

नवमुनिगुफा- इसके भीतर १०वीं शताब्दी का लेख है जो इस भाँति हैं—

१. ॐ श्रीमत् उद्योतकेशरीदेवस्य प्रवर्द्धमाने विजय राज्ये संवत् १८
२. श्रीआर्य्यसंघप्रतिबद्ध ग्रहगुलबिनिर्गतदेशीगणाचार्य्य श्रीकुलचन्द्र
३. भट्टारकस्यतस्यशिष्यशुभचन्द्रस्य।

इस लेख में स्पष्ट लिखा है कि उद्योतकेशरीदेव के उन्नतिशील राज्य के १८वें वर्ष में श्री शुभचन्द्र आचार्य यहाँ विराजित थे जो श्री आर्य्यसंघगृहकुलदेशीगण के आचार्यकुलचन्द्रभट्टारक के शिष्य थे।

इसी गुफा में टूटी हुई भीत पर दूसरा शिलालेख इसी समय का है, जिसके वाक्य ये हैं–

ऊं श्री आचार्य्य कुलाचान्द्रस्या तास्या शिष्यरवल्लशुभचन्द्रस्य..........छात्र विजो

खंड़गिरि

इससे भी शुभचन्द्र आचार्य का नाम प्रगट है-– इस गुफा के दाहिने कमरे में एक एक फुट ऊँची दस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ है उनमें शासनदेवी बनी हुई है। श्रीपार्श्वनाथजी की दो मूर्तियां हैं। जिनके ऊपर सर्पफणमण्डप किये हुए हैं– उनकी विशेष मान्यता प्रगट है और इस गुफा के आगे

बारहभुजागुफा- इसका नाम बारह भुजा इसलिये है क्योंकि बरामदे की दीवार के बाई तरफ एक देवी की मूर्ति है जिसके बाहर भुजायें हैं।

बरामदे से होकर तीन द्वार वाले लम्बे कमरे में जाना होता है ये द्वार अब गिर गये हैं छत की रक्षा अब दो नये स्तम्भ देकर की गई है।

भीतों पर पद्मासन तीर्थंकर की मूर्तियाँ देवी सहित अंकित हैं। पीछे की तरफ श्री पार्श्वनाथ की बड़ी खड़गासन मूर्ति है। जिसपर ७ फल का मण्डप है इस पर देवी का चिन्ह अंकित नहीं है- इन सब मूर्तियों के भिन्न-भिन्न चिन्ह दिये हुए हैं। इसी के पास दक्षिण में—

त्रिशूलगुफा है- जिसका कमरा २२ फुट लम्बा ७ फुट चौड़ा व ८ फुट ऊंचा है। इसमें भी २४ तीर्थंकरों की मूर्तियां अंकित हैं। इन्हीं में ७ फण मण्डप सहित श्री पार्श्वनाथजी की खड़गासन मूर्ति तथा अन्त में श्री महावीर स्वामी की मूर्ति है। इन २४ तीर्थंकरों के समुदाय में भी श्री पार्श्वनाथजी को श्री महावीर स्वामी के पहले न देकर मध्य में विराजित किया है। (अर्थात् इससे यह सिद्ध होता है कि श्री पार्श्वनाथजी की विशेष भक्ति को दर्शाने वाली यह गुफा है । यह भी सम्भव है कि ये मूर्तियाँ श्री पार्श्वनाथजी के निर्वाण के बाद और महावीर स्वामी के निर्वाण के पहले विराजमान की गई हो।

पन्द्रहवें तीर्थंकर का आसन एकवेदी से ढका हुआ है जिस पर तीन पद्मासन सुन्दर मूर्तियाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान की है इस गुफा की मूर्तियों का आकार पहले की गुफाओं की मूर्तियों के आकार से सुन्दर है। बाई तरफ वहाँ से आने से ५० या ६० फुट ऊँचा देखने से वहाँ जैन मूर्तियाँ अंकित हैं—

पश्चिम की तरफ २ खण्ड की गुफा है- इसको सिंहगुफा या ललतेन्दुकेसरीगुफा कहते हैं। पहले खण्ड के कमरे में जैन तीर्थंकर की मूर्तियाँ अंकित हैं— जिनमें सबसे मुख्य श्री पार्श्वनाथ की है उसमें एक शिलालेख भी अंकित है—

१. ऊँ-श्रीउद्योतकेसरीविजयराज्य संवत् ५।, २. श्रीकुमारपर्वत स्थाने जीर्ण वापि जीर्ण इसान।, ३. उद्योतित तस्मिन् थाने चतुर्विंशति तीर्थंकर।, ४. स्थापिता प्रतिष्ठा काले हरि ओप जसनंदिकं।, ५. क्ष....हु....ति....दुथा.........।, ६. श्री पार्श्वनाथस्य कर्मक्षयाय।

(नोट : इस लेख में राजा उद्योतकेशरी का नाम व संवत् ५ आया है तथा खण्डगिरि का नाम कुमार पर्वत लिखा है– यहाँ एक जीर्ण मंदिर व बापी थी। यहाँ २४ तीर्थंकर प्रतिष्ठित किये गये। प्रतिष्ठा के समय में यहाँ श्री बसनन्दिआचार्य मौजूद थे) इसके आगे एक झील है जिसको आकाश गंगा कहते हैं–

अनन्तगुफा- खंडगिरि की दाहिनी तरफ एक लम्बा कमरा है, जो २३ फुट चौड़ा व २४ फुट लम्बा व ६ फुट ऊंचा है, चार द्वार हैं।

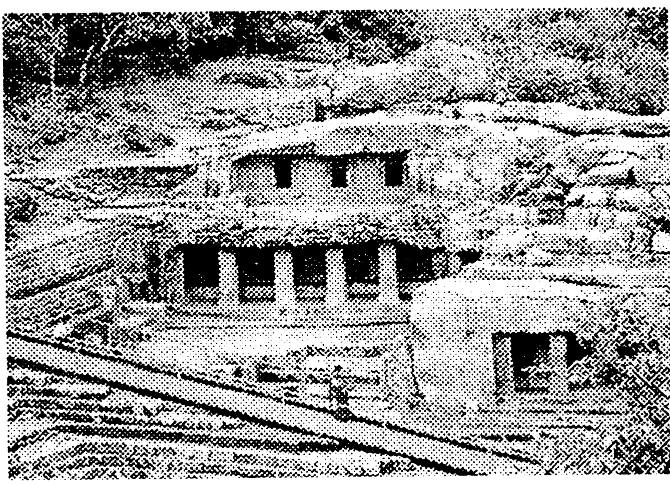

पीछे की भीत पर ७ पवित्र चित्र अंकित हैं। उनमें स्वस्तिक, त्रिशूल, आदि हैं- यहाँ लेख ई० सन् से पहले के हैं।

दोहद समनानम् लेनम् दोहद के साधुओं की गुफा तथा दंडाचार अर्थ समझ में नहीं आया।

एक दूसरी गुफा में ५ पंक्ति का लेख है।

१. श्रीशान्तिकर सौराज्याद आचन्द्रार्कम्।, २. गुहे गुहे खदि ?

संझे पुनः अंगे-भाग।, ३. जास्य बिरजे जने इज्या गर्भ समुद्।, ४. भूतो नन्नं तस्य सुतो भिषक भीमतो।, ५. याचते वान्य प्रस्थम् सम्वत् सरात् पुनः।

उपरोक्त शिलालेखों से यह पता चलता है कि खण्डगिरि उदयगिरि का नाम १०वीं तथा ११वीं शताब्दी तक **कुमारकुमारोपर्वत** प्रसिद्ध था। त्रिशूल गुफा के ऊपर एक सफेद पुता हुआ जिनमन्दिर हैं जिसकी मिति निश्चित नहीं है–यहाँ से दक्षिण की तरफ पत्थर की चट्टान ऊपर जैन तीर्थंकरों की कई मूर्तियां अंकित है जो इधर-उधर पत्थरों के गिरने से

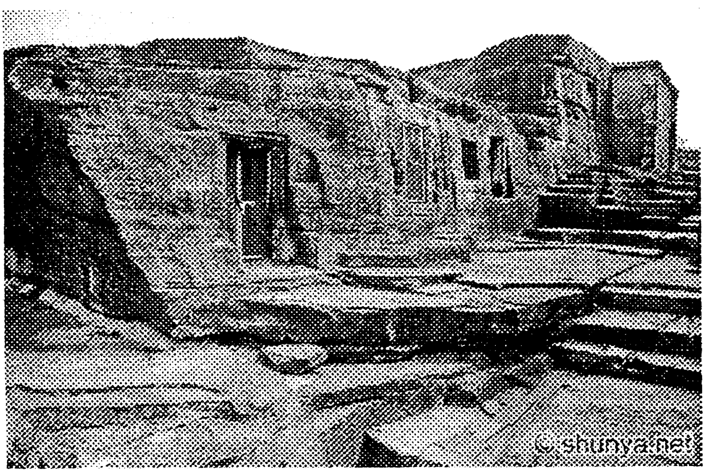

Cave of Khandagiri 100 B.C. 100 A.D.

साफ एवं प्रगट मालूम नहीं होती हैं—यहाँ पर भी एक गुफा थी जिसमें भी जैनतीर्थंकरों की मूर्तियाँ थी–पर्वत की चट्टान के मध्य में एक जैन मंदिर है जिसमें पाँच जैन मूर्तियां हैं।

खंड़गिरि के दक्षिण पश्चिम में नीलगिरि है–यहाँ **राधाकुंड और श्यामकुंड हैं।**

इन गुफाओं में से हाथीगुफा के लेख सन् ई० से १५८ या १५३ वर्ष पहले की है— तथा उदयगिरि की स्वर्गपुरी, मञ्चपुरी, सर्पगुफा, बाघगुफा, जाम्बेश्वर, हरिदास, ऐसी ६ गुफाओं में तथा खण्डगिरि की तत्वगुफा दो और अनंतगुफा इस तरह ९ गुफाओं में शिलालेख ब्राह्मी अक्षरों में हैं। तथा ये गुफाएं हाथीगुफा के आस पास के समय में ही खोदी गई होगी। उनमें कुछ गुफाएं हाथी गुफा से पहले की भी है। बुड्डराज ने यहाँ ग्यारह गुफाओं का जैन साधुओं के लिये निर्माण कराया था ऐसा उल्लेख मिलता है। इन गुफाओं में जैन धर्म के प्रतीक नमीपद, चैत्य, वर्धमंगल, स्वास्तिक आदि खुदे हुए मिले हैं।

धानघर और हाथीगुफा- हाथी गुफा ५० फुट से २८ फुट है मुख ११ फुट ऊंचा है— भीतों पर कुछ शब्द अंकित हैं। प्रगट रूप से साधुओं या यतियों के नाम हैं। छतकी चट्टान पर १७ लाइन का लेख है १५ फुट से ६ फुट की माप है। यही प्रसिद्ध खारवेल का लेख है जिसके विषय में जेम्स फरग्यूसन लिखते हैं–

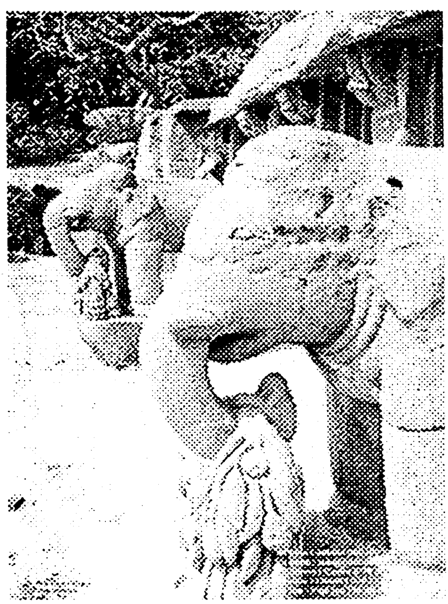

उदयगिरि (हाथीगुम्फा)

The whole style of the architecture and sculpture in the older vaves here points to a period quite as early as that of the Sanchi gateways and the small vihara at Bhaja,

and we cannot be far wrong in ascribing most of them at least to the 2nd century before our era. Nor is any trace of Buddhism found among them.

हाथीगुंफा इस शिलालेख को सर्वप्रथम अट्ठारह सौ बीस ईसवीं में पादरी स्टलिंग ने देखा था। असुरक्षा के कारण लेख जर्जर अवस्था में था। करीब सौ वर्षों के प्रयत्न के बाद सन् उन्नीस सौ अट्ठारह में यह पढ़ा गया और यह निश्चित किया गया कि यह लेख कलिंगाधिपति महामेघवाहन राजा खारवेल का है। यह शिलालेख पन्द्रह फुट के करीब लम्बा और पाँच फुट चौड़ा है। इसमें सत्रह पक्तियाँ खुदी हुई है।

१. नमो अराहंतानं (।) नमो सवधिधानं (।) एरेन महाराजेन महामेघवाहनेन चेतिराज वसवधनेन पसथसुभलखनेन चतुरंतलुठितगुनोपहितेन कलिंगाधिपतिना सिरि खारवेलेन।

अनुवाद : अरिहन्तों को नमस्कार, सिद्धों को नमस्कार, ऐर (ऐल) महाराजा महामेघवाहन (मरेन्द्र) चेदिराजवंशवर्धन, प्रशस्त, शुभ लक्षण युक्त, चतुरन्त व्यापि गुण युक्त कलिगाधिपति श्री खारवेल ने।

२. पंदरसवसानि सिरि-कडार-सरीरवता कीडिता कुमारकीडिका (।) ततो लेखरूपगनाववहार-विधिविसारदेन सवविजावदातेन नववसानि योवरजं पसासितं (।) संपुण-चतु-वीसति-वसो तदानि वधमान-वेनाभिवि-जयोततियें।

अनुवाद : पन्द्रह वर्ष पर्यन्त श्री कडार (गौर वर्ण युक्त) शारीरिक स्वरूप वाले नेवाल्यावस्था की क्रीड़ाएं की। इसके पीछे लेख्य (सरकारी फरियाद नामा आदि) रूप (टंकशाल) गणित (राज्य की आय व्यय तथा हिसाब) व्यवहार (नियमोपनियम) और विधि (धर्म शास्त्र आदि) विषयों में विशारद हो सर्व विद्यावदात (सर्व विद्याओं में प्रबुद्ध) ऐसे (उन्होंने) नौ वर्ष पर्यन्त युवराज पद पर रहकर शासन का कार्य किया।

उस समय पूर्ण चौबीस वर्ष की आयु में जोकि बालवय से वधमान और जो अभिविजय में वेन (राज) है ऐसे वह तीसरे।

३. कलिंगराजवंश-पुरिसयुगे महाराजाभिसेचनं पापुनाति (।) अभिसितमतो च पधमे वसे बात-विहतगोपुर-पाकार-निवेसनं पटिसंखारयति (।) कलिंगनगरि (f) खवीर-इसि-ताल-तडाग-पाडि यो च बंधापयति (।) सवुयानपटिसंठपनं च।

अनुवाद : पुरुष युग में (तीसरी पुश्त में) कलिंग के राज्यवंश में राज्याभिषेक पाये। अभिषेक होने के पश्चात् प्रथम वर्ष में प्रबल वायु उपद्रव से टूटे हुए दरवाजे वाले किले का जीर्णोद्धार कराया। राजधानी कलिंगनगर में ऋषि खिबीर के तालाब और किनारे बँधवाए। सब बगीचों की मरम्मत।

४. कारयति (।।) पनतीसाहि सतसहसेहि पकतियो च रंजयति (।) दुतिये च वसे अचितयिता सातकंणि पछिमदिसं हय-गज-नर-रथ-बहुलं दंडं पठापयति (।) कज्हवेंनां गताय च सेनाय वितासितं मुसिकनगरं (।) ततिये पुन वसे।

५. गंधव-वेदबुधो दंप-नत-गीतवादित संदसनाहि उसव-समाज कारापनाहि च कीडापयति नगरिं (।) तथा चवुथे वसे विजाधराधिवासं अहत-पुवं कालिंग पुवराजनिवेसितं..........वितध मकुटसबिलमढिते च निखित छत।

अनुवाद : करवाइ। पैंतीस लाख प्रकृति (प्रज्ञा) का रंजन किया। दूसरे वर्ष में सातंकणि (सातंकणि) की किंचित भी परवाह न करके पश्चिम दिशा में चढ़ाई करने को घोड़े हाथी, रथ और पैदल सहित बड़ा सेना भेजी। कन्हवेनों (कृष्णवेणा) नदी पर पहुँची हुई सेना से मुसिकभूषिका नगर को त्रास पहुँचाया। और तीसरे वर्ष में गंधर्व वेद के पंडित ऐसे (उन्होंने) दंप (डफ?) नृत्य, गीत, वादित्र के संदर्शन

(तमाशे) आदि से उत्सव समाज (नाटक, कुश्ती आदि) करवा कर नगर को खेलाया; और चौथे वर्ष में विद्याधराधिवासे को केगिस को कलिंग के पूर्ववर्ती राजाओं ने बनवाया था और जो पहले कभी भी पड़ा नहीं था। अर्हत पूर्व का अर्थ नया चढ़ाकर यह भी होता है........ जिसके मुकुट व्यर्थ हो गये हैं। जिनके कवच बख्तर आदि काटकर दो टुकड़े कर दिये गये हैं, जिनके छत्र काटकर उड़ा दिये गये हैं।

६. भिंगारे हित-रतन-सापतेये सवरठिक भोजके पादे वंदापयति (।) पंचमे च दानी वसे नंदराज-तिवस-सत-ओघाटित तनसुलिय-बाटा पनाडिं नगरं पवेस (ति) (।) सो......भिसितो च राजसुय (०) संदश-यंतोसव-कर-वणं।

अनुवाद : और जिनके शृंगार (राजकीय चिन्ह, सोने चांदी के लोटे झारी) फेंक दिये गए हैं, जिनके रत्न और स्वापतेय (धन) छीन लिया गया है ऐसे सब राष्ट्रीय भोजकों को अपने चरणों में झुकाया, अब पांचवें वर्ष में नन्दराज्य के एक सौ और तीसरे वर्ष (संवत्) में खुदी हुई नहर को तनसुलिय के रस्ते राजधानी के अन्दर ले आए। अभिषेक छटवें वर्ष राजसूय यज्ञ के उजवते हुए। महसूल के सब रुपये।

७. अनुग्रह अनेकानि सतसहसानि विसजति पोरं जानपदं (।) सतमं च वसं पसासतो वजि-रघरव (ँ) तिघुसित-घरिनीस (–मतुकपद-पुंना (ति? कुमार)....... (।) अठमे च वसे-महता सेना........ गोरधगिरि।

अनुवाद : माफ किये वैसे ही अनेक लाखों अनुग्रहों पौर जनपद को बक्सीष किए। सातवें वर्ष में राज्य करते आपकी महारानी बज्रधर वाली धूषिता (Demetrios) ने मातृपदे को प्राप्त किया (१) (कुमार १)........... आठवें वर्ष में महा + + + सेना .... गोरधगिरि।

८. घाता पयिता राजगहं उपपीडापयति (।) एतिनं च कंमापदान-संनादेन संवित-सेन-वाहनो विपमुंचितु मधुरं अपयातो यवनराज डिमित.......(मो ?) यछति (वि)......... पलव........

अनुवाद : को तोड़ करके राजगृह (नगर) को घेर लिया जिसके कार्यों से अवदात (वीर कथाओं का संनाद से युनानी राजा (यवन राजा) डिमित (......... अपनी सेना और छकड़े एकत्र कर मथुरा में छोड़ के पीछा लौट गया........ नौवें वर्ष में (वह श्री खारवेल ने) दिये हैं.......... पल्लव पूर्ण।

९. कपरुखे हय-गज-रध-सह-यंते सवधरावास-परिवसने स-अगिणठिया (।) सव-गहनं च कारयितुं बम्हणांनं जातिं परिहारं ददाति (।) अरहतो........व.......न.......गिय

अनुवाद : कल्पवृक्षो! अश्व हस्ती रथों (उनको) चलाने वालों के साथ वैसे ही मकानों और शालाओं अग्निकुण्डों के साथ यह सब स्वीकार करने के लिए ब्राह्मणों को जो जागीरें भी दी अर्हत का.....

१०. (का). ि मान (ति) . रा (ज)-संनिवासं महाविजयं पासादं कार (ति) अठतिसाय सतसहसेहि (।) दसमे च दंड-संधी-साम मयो भरध-बस-पठानं महि-जयनं ति कारा पयति........निरितय उयातानं च मनिरतना (नि) उपलभते (।)

अनुवाद : राजभवन रूप महाविजय (नाम का) प्रासाद उसने अड़तीस लाख (पण) से बनवाया। दसवें वर्ष में दंड, संधी साम प्रधान (उसने) भूमि विजय करने के लिये भारतवर्ष में प्रस्थान किया.......जिन्हों के ऊपर (आपने) चढ़ाई करी उनसे मणिरत्न वगैरह प्राप्त किये।

११. .... मंडं च अवराजनिवेसितं पीथुड गदभ-नंगलेन कासयति (ि) जनस दंभावनं च तेरसवससतिक (ं) तु भिदति तमरदेह-संघातं (।) वारसमे च वसे.....हस....के.ज. सवसेहि वितासयति उतरापथ-राजानो....

अनुवाद : ....(ग्यारहवें वर्ष में) (किसी) बुगराजा ने बनवाया मेड (मडिलाबाजार) को बड़े गदहों से हलसे खुदवा दिया, लोगों को धोखाबाजी से ठगने वाले ११३ वर्ष के समर का देहसंधान को तोड़ दिया। बाहरवें वर्ष में........री उत्तरापथ में राजाओं को बहुत दुःख

१२. ....मगधानं च विपुलं भयं जनेता हथी सुगंगीय (ं) पाययति (।) मागधं च राजानं वहसंतिमितं पादे वंदापयति (।) नंदराज-नीतं च कालिंगजिनं संनिवेसं.......गह-रतनान पडिहारेहि अंगमागध-बसुं च नेयाति (।) दिया।

अनुवाद : और मगध वासियों को बड़ा भारी भय उत्पन्न करते हुए हस्तियों को सुगंग (प्रासाद) तक ले गया और मगधाधिपति वृहस्पति को अपने चरणों में झुकाया तथा राजानन्द दास ले गई कलिंग जिन मूर्ति को और गृहरत्नों को लेकर प्रतिहारों द्वारा अंग मगध का धन ले आया।

१३. ....तु (ं) जठर लिखित-वहानि सिहरानि नीवेसयति सत-वेसिकनं परिहारेन ।) अभुतमछरियं च हाथि-नावन परीपुरं सब-देन हय-हथी-रतना (मा) निकं पंडराजा चेदानि अनेकानि मुतमणिरतनानि अहरापयति इध सतो।

अनुवाद : ....अन्दर से लिखा (खुदे हुए) सुन्दर शिखरों को बनवाया और साथ में सौ कारीगरों को जागीरें दीं अद्भुत और आश्चर्य (हो ऐसी रीति से) हाथियों के भरे हुए जहाज नजराना हो। हस्ती रत्न माणिक्य, पाडयराज के यहाँ से इस समय अनेक मोती मानिक रत्न छूट करके लाये ऐसे वह सक्त (लायक महाराजा)।

१४. ....सिनो वसीकरोति (।) तेरसमे च वसे मुपवत-विजयचक-कुमारीपवते अरहिते य (?) प-खीण-संसितेहि कायनिसीदीयाय याप-ञावकेहि राजभितिनि चिनवतानि वसासितानि (।) पूजाय रत-उवास-खारवेल-सिरिना जीवदेह-सिरिका परिखिता (।)

अनुवाद : ....सब को वश किये। तेरहवें वर्ष में पवित्र कुमारी पर्वत के ऊपर जहाँ (जैन धर्म का) विजय धर्म चक्र सुप्रवृत्तमान है। प्रक्षीण संसृति (जन्म मरणों को नष्ट किये) कायनिषिदी (स्तूप) ऊपर (रहने वाले) पाप को को बताने वाले (पाप ज्ञापकों) के लिये व्रत पूरे हो गये पश्चात् मिलने वाले राज (विभूतियाँ कायम कर दीं। (शासनों बन्ध दिये) पूजा में रक्त उपासक खारवेल ने जीव और शरीर की श्री की परीक्षा करली (जीव और शरीर परीक्षा कर ली है।

१५. ....(सु) कतिसमणसुविहितानं (नुं-१) च सत-दिसानं (नु-१) आनिनं तपसि-इसिनं संघियनं (नुं १) (;) अरहत-निसीदिया समीपे पभारे बराकर-समुथपिताहि अनेक योजनाहिताहि प. सि. ओ......सिलाह सिंहपथ-रानिसि (˙) धुडाय निसयानि।

अनुवाद : सुकृति श्रमणे सुविहित शत दिशाओं के ज्ञानी-तपस्वी ऋषि संघ के लोगों को........ अरिहंत के निषीहीका पास पहाड़ के ऊपर उन्दा खानों के अन्दर से निकाल के लाये हुए–अनेक योजनों से लाये हुए....सिंह प्रस्थवाली रानी सिन्धुला के लिए निःश्रय......

१६. ....घंटालक्तो X चतरे व वेडूरियगभे थंभे पतिठापयति, (,) पान-तरिया सत सहसेहि (।) मुरिय-काल वोछिंनं च चोयठिअंग-सतिकं तुरियं उपादयति (।) खेमराजा स बढ राजा स भिखुराजा धमराजा पसंतो सुनंतो अनुभवंतो कलाणानि

अनुवादः घंटा संयुक्त (˙˙˙) वैडुर्य रत्न वाले चार स्तम्भ स्थापित किये। पचहत्तर लाख के व्यय से मौर्यकाल में उच्छेदित हुए चौसठ (चौसठ अध्याय वाले) अंग सप्तिकों का चौथा भाग पुनः तैयार करवाया। यह खेमराज वृद्धराज भिक्षुराज धर्मराज कल्यान को देखते और अनुभव करते।

१७. ....गुण-विसेस-कुसलो सब-पांसडपूजको सब-देवायतनसंकारकारको (अ) पतिहत चकिवाहिनिबलो चकधुरी गुतचको पवत-चको राजसि-वस-कुलविनिश्रितो महा-विजयो राजा खारवेल-सिरि

अनुवाद : छ गुण विशेष कुशल सर्व पंथो का आदर करने वाला सर्व (प्रकार के) मन्दिरों की मरम्मत करने वाला अस्खलित रथ और सेता वाला चक्र (राज्य) के धुरा (नेता) गुप्त (रक्षित) चक्र वाला प्रवृतचक्रवाला राजर्षि वश विनिःसृत राजा खारवेल।

क्रमशः

हरिश्चन्द्र तारा

रोहित के इस कार्य का नाम सत्याग्रह है। भय या आपत्ति से न डरकर, अपने अधिकारों पर स्थिर रहना, या अपने अधिकारों की प्राप्ति एवं रक्षा का उपाय करना ही सत्याग्रह है। रोहित के इस सत्याग्रह से प्रकट है, कि उस समय बालक भी सत्याग्रह करना जानते थे, लेकिन आज के तो अधिकांश वृद्ध भी सत्याग्रह के नाम को सुनकर ही डरते सुने जाते हैं। इस अन्तर का कारण, शिक्षा का अन्तर ही है। पहले के बालकों को वीरता की शिक्षा दी जाती थी, लेकिन आजकल के बालकों को कायरता की शिक्षा दी जाती है। जहाँ, पहले के बालकों को यह सिखाया जाता था, कि वे किसी से भय न करे, वहाँ आज के बालकों को, भूत-प्रेत के झूठे भय से डराया जाता है। इस तरह आज के बालकों में कायरता की भावना भरी जाती है, अब वे सत्याग्रह करे तो कैसे? क्योंकि सत्याग्रह वीर ही कर सकता है, कायर नहीं।

साँप ने जब रोहित को मार्ग न दिया तब रोहित वृक्ष के आसपास फैली हुई डालियों में से एक को पकड़कर, वृक्ष पर चढ़ने लगा। वह जैसे ही वृक्ष पर चढ़ने लगा सर्प ने दौड़कर, अपने दाँतों से उसका पैर काट खाया। साँप के काटते ही बालक रोहित छटपटाकर भूमि पर गिर पड़ा। एक क्षण में ही उसके छोटे और कोमल शरीर में भुजंग का विष फैल गया।

वृक्ष से गिरकर रोहित, आप ही आप कहने लगा—माता तारा! आज तुम्हारा रोहित, सर्प के काटने से विनष्ट होता है। तुम्हारे समीप कोई नहीं है तुम्हें माता कहने वाला, आज इस संसार में कोई न रहेगा, यह विचार कर हृदय दुःख से फटा जाता है। पिताजी इस समय न

मालूम कहाँ है और तुम दासीत्व के बन्धन में जकड़ी हुई हो। मैं विचारता था कि मैं अपने उद्योग से तुमको दासीत्व के बन्धन से मुक्त कराऊंगा और पिताजी को भी खोज लाऊँगा, परन्तु यह मेरी आशा आज निराशा में परणित होकर, मेरे ही साथ, काल के भयंकर गाल में जा रही है। माता, मेरा मृत्यु समाचार तुम्हें कौन सुनावेगा और उसे सुनकर, तुम जीवित रह सकती हो! जीवित रहो या न रहो, लेकिन अब तुम अपने अमूल्य रत्न रोहित को न देखने पाओगी। माता ! माता तारा! तुम मेरी मृत्यु की चिन्ता इसलिए न करना, कि मैं कायरों की तरह प्राण नहीं खो रहा हूँ, किन्तु उसी प्रकार वीरों की तरह प्राण त्याग रहा हूँ, जैसे कि तुमने अपनी शिक्षा में मुझे सिखाया था। तुमने, मेरे लिये अनेक कष्ट सहे, तुम मुझे अपना हृदय धन, जीवन सुख और प्राणों का आधार बनाती थी, लेकिन मैं बीच ही में तुम्हारा साथ छोड़कर जा रहा हूँ। तुम मुझे धैर्य रखने की शिक्षा दिया करती थी लेकिन इस समय तुम्हारे धैर्य की परीक्षा है। तुम मेरे मृत्यु समाचार को सुनकर, धैर्य रखना और मेरा पुत्र वीरगति को प्राप्त हुआ है, वह विचार कर सन्तोष लाना। पिता! तुम्हें बिछुड़े विशेष-समय हुआ है। एक बार आकर देखो तो कि तुम्हारा प्यारा रोहित आज किस प्रकार मृत्यु का आलिंगन कर रहा है। आप, मुझे अपने प्राणों से अधिक प्रिय समझते थे, परन्तु मैं आज आप लोगों को सदा के लिये विषाद-सागर में छोड़कर जा रहा हूँ। आपके न होने से माता जब मेरे लिए विलाप करेगी, तब उनका विलाप कौन सुनेगा और कौन उन्हें धैर्य प्रदान करेगा? कुछ भी हो, अब मुझे इस समय इन बातों की चिन्ता न करके, उस परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, जिसके स्मरण की माता ने शिक्षा दी है। प्रभो! मेरी माता के बताए हुए प्रभो! यह तुच्छ सेवक आपकी शरण है। आप, इसे अपनी शरण में स्थान दीजिए। मैं तो आपको जानता नहीं हूँ, मैंने कभी आपको देखा भी नहीं है, लेकिन माता की शिक्षा पर भी अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। मैं, अपनी माता के बताने से ही तुम्हारा स्मरण करता हूँ और तुम से प्रार्थना करता हूँ, कि इस अधम का हाथ पकड़िए।

ईश्वर प्रार्थना के पश्चात्, वह फिर कहने लगा—माता! यद्यपि आप लोगों को मेरा यह अन्तिम प्रणाम सुनानेवाला कोई नहीं है, लेकिन मैं पुत्र के कर्त्तव्यानुसार आपको प्रणाम करता हूँ और इस संसार से सदा के लिए बिदा होता हूँ। यह कहते-कहते रोहित, विष के प्रभाव से बेहोश हो गया।

कुछ लोगों ने रोहित को साँप के काटने से गिरते देखा था। वे दौड़कर रोहित के पास आए। रोहित को देखकर वे लोग आपस में विचार करने लगे, कि यह सुन्दर बालक न मालूम किसका है। इसका कोमल-शरीर, देखते ही देखते विष के मारे हरा हुआ जा रहा है। वह, माता शब्द का उच्चारण करने के साथ ही, तारा नाम का भी उच्चारण करता है इससे जान पड़ता है, कि इसकी माता का नाम तारा है। लेकिन तारा न मालूम कौन और कहाँ रहती है। यदि यह मालूम होता कि तारा कौन है और कहाँ रहती है तो उसे समाचार दे दिया जाता। इतने में उन्हीं लोगों में से एक न कहा, कि अमुक ब्राह्मण के यहाँ तारा नाम की एक दासी है। इस बालक को भी उसी ब्राह्मण के यहाँ देखा था। सम्भव है, कि यद्यपि यह बहुत थोड़ी देर का मेहमान है, इसके मरने में अब देर नहीं है, लेकिन इस समय भी यदि इसकी माता को कोई सूचना दे देता, तो वह बेचारी अपने पुत्र का मुँह तो देख लेती! कुछ बालक, जो वहाँ आ खड़े हुए थे, उन्होंने यह कार्य करना स्वीकार किया और वे दौड़कर उस ब्राह्मण के घर की ओर चले, जिसके यहाँ तारा रहती थी।

विपत्ति-वज्र : सांसारिक मनुष्य और सब दुःखों के सहन करने में धैर्यवान हो सकते हैं, परन्तु सन्तति–वियोग का दुःख उन्हें असह्य हो उठता है। कई सन्तानों के होने पर भी किसी एक के वियोग का दुःख सहन करने में जब उनका धैर्य छूट जाता है, तब यदि एक ही संतान हो, तथा उसका वियोग हो जावे, तो धैर्य न रहना स्वाभाविक है।

रोहित, तारा का एकमात्र पुत्र था। उसी रोहित के सहारे, वे अपने दिन व्यतीत करती थी। उसी का मुख देखकर वे प्रसन्न रहती

और उसी से उन्हें सुन्दर भविष्य की आशा थी। वे इस विपत्ति के समय भी, अपने इस पुत्र-रत्न को सुरक्षित रखती, उसके खाने पीने की चिन्ता रखती और उसके लिये आप स्वयं भूखी भी रहती। परन्तु दुष्ट देव ने, तारा से उसका यह पुत्र रत्न भी छीन लिया। पुत्र वियोग के दुःख का तारा के हृदय पर कैसा आघात हुआ होगा यह अनुमान से ही जाना जा सकता है।

जिस समय रोहित का समाचार लेकर, बालकगण ब्राह्मण के यहाँ आये, उस समय तारा रोहित की ही चिन्ता कर रही थी। नित्य के समय से, बहुत अधिक समय व्यतीत हो जाने पर भी, उसके न आने से, तारा नितान्त विकल थी। वे, मन ही मन अनेक प्रकार के संकल्प विकल्प कर रही थी। इसी अवस्था में बालकों ने पहुँचकर उनसे कहा, कि तुम्हारा पुत्र तुम्हें पुकारता हुआ, मूर्छित होकर गिर पड़ा है। तारा ने घबराकर पूछा— वह कहाँ है? मैं तो उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ।

बालक— यद्यपि है तो दुःखद-समाचार उसके सुनने से तुम्हें बहुत दुःख होगा, इसलिए न सुनाना ही उचित है परन्तु न सुनाने से तो और भी अधिक हानि है और आखिर कब तक न सुनावेंगे? इसलिए सुनाए देते हैं। तुम्हारा बालक एक वृक्ष पर चढ़ रहा था। उसे ऊपर चढ़ते समय, एक साँप ने काट खाया, इससे वह बेहोश पड़ा है। उसके सारे शरीर में विष छा गया है और हमारे यहाँ पहुँचने के पहले ही, उसने अपनी संसार यात्रा समाप्त कर दी होगी।

बालकों ने तारा को यह समाचार क्या सुनाया, मानों उस पर वज्र-प्रहार किया हो। तारा, अपने पुत्र का यह समाचार सुनते ही इतनी अधिक अधीर हो उठी कि तत्क्षण मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। पुत्र के वियोग का दुःख, तारा के लिए अत्यधिक असह्य था, इसलिए यह मूर्छा की अवस्था, उन्हें थोड़ी देर के लिए सुखदात्री सिद्ध हुई। व

जितनी देर मूर्छित रही, उतनी देर पुत्र के दुःख से बची रही, लेकिन उन्हें तो पुत्र वियोग सहकर, अपने सत्य की परीक्षा देनी है, अतः यह मूर्छावस्था भी उनके समीप अधिक देर तक न ठहरी।

जिस समय तारा मूर्छित पड़ी थी और बालकगण उनके आसपास खड़े थे। उसी समय ब्राह्मण भी वहाँ आ गया। तारा को पड़ी और बालकों को खड़े देखकर, ब्राह्मण ने बालकों से पूछा, कि क्या बात है? बालकों ने रोहित के सर्प से डँसे जाने का वृत्तान्त सुनाकर कहा कि इस समाचार के सुनते ही ये मूर्छित होकर गिर पड़ी है। ब्राह्मण ने विचारा कि इसका लड़का तो मर ही चुका है, परन्तु उसके दुःख से कहीं यह भी न मर जाये। नहीं तो मेरे पाँचसौ स्वर्ण मुद्राएँ यो ही जावेंगी। इस प्रकार विचारकर, ब्राह्मण ने तारा की मूर्छा हटाने के लिए उनके मुख पर जल छींटा। शीतल जल के लगने से, तारा की मूर्छा दूर हुई और वे रोहित रोहित करके विलाप करने लगी। ब्राह्मण ने तारा को ताड़ना पूर्वक कहा कि जब मैं कहता था कि अपने बालक को कहीं न जाने दे, तब तूने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया और अब उसके लिए विलाप करती है! क्या उसके साथ तू भी रो-रोकर अपने प्राण देगी और इस प्रकार मेरी मुद्राएँ डुबा देगी? अब रोने से क्या लाभ है? जा और उसका जो कुछ करना हो, सो करके वापिस जल्दी आ!

ब्राह्मण के, इन पशुतापूर्ण शब्दों से, दुःखित तारा के हृदय में कैसी चोट पहुँची होगी, इस बात को प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है। लेकिन तारा विवश थी अतः वे इन्हें सुन लेने के सिवा और क्या कर सकती थी? इन कठोर शब्दों के लिए भी तारा ने अपने मन में उसे धन्यवाद दिया, कि इन्होंने कम से कम बिना माँगे ही पुत्र के अंतिम संस्कार के लिए मुझे समय तो दिया।

संसार का नियम है कि दुःख सहानुभूति से भी कम होता है और ताड़ना से भी। कहीं कहीं सहानुभूति और ताड़ना दोनों से ही दुःख बढ़

जाता है किन्तु अधिकतर कम ही होता है। ब्राह्मण की ताड़ना से तारा अपने पुत्र के दुःख को एक क्षण के लिए भूल सी गई। उन्होने धैर्य धारण करके ब्राह्मण से कहा- पिताजी जो होना था सो तो हुआ, परन्तु अब मैं अबला अकेली वहाँ जाकर क्या कर सकूंगी? दया करके या तो आप चलिये या और किसी को मेरे साथ भेज दीजिये, जिसमें उसे देखकर यदि हो सके, तो उसका कोई उपचार किया जावे।

तारा के इस समय के शब्दों का एक सहृदय मनुष्य पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ सकता है, परन्तु उस ब्राह्मण में सहृदयता नाम मात्र को भी न थी। उसने तारा की इस विचलित कर देने वाली प्रार्थना के उत्तर में कहा— वह तो मर ही गया है, अब उस मरे हुए का क्या करना? वन के मरे हुए को ग्राम या घर में तो लाना ही नहीं है, फिर हम तेरे साथ-साथ कहाँ घूमते फिरे? जा जल्दी जा। देर मत कर और उसे जलाकर फिर जल्दी आ जाना देर मत करना।

जिन तारा की सेवा में, सदा सैकड़ों हजारों सेवक और सेविकाएं उपस्थित रहती थीं, जिनके मुख से आज्ञा निकलते ही काम होता था, जो स्वयं दूसरे को दुःख के समय सहायता दिया करती थीं, उन्हीं तारा को आज, उपरोक्त उत्तर सुनना पड़ रहा है और वह भी ऐसे समय में जबकि उनका प्रिय पुत्र मरा हुआ पड़ा है। लेकिन तारा इस उत्तर से उतना दुःखित न हुई जितना दुःख उन्हें पुत्र का है। उन्होंने ब्राह्मण का उत्तर सुनकर और उसकी ओर से निराश होकर बालकों से कहा भाइयों वह कहाँ पड़ा है, चलकर दिखा तो दो। बालकों ने तारा की बात मान ली। विलाप करती हुई तारा, उन बालकों के साथ हो ली और जहाँ रोहित पड़ा था, वहाँ चली।

बालकों ने वहाँ पहुँचकर विष के प्रभाव से मृत रोहित का शव, तारा को दिखा दिया। तारा ने दौड़कर, रोहित के शव को उठा लिया और विलाप करने लगी।

रोहित के शव को गोद में लेकर, विलाप करती हुई। तारा कहने लगी-रोहित! बेटा रोहित! तुम किस नींद में सोये हो? तुम्हारी अभागिनी माता, तुम्हारे समीप बैठी रो रही है, फिर चुपचाप क्यों पड़े हो? सदा तो तुम अपनी माता के दुःख को दूर कर दिया करते थे, अनेक प्रकार की बाते करके आश्वासन दिया करते थे, फिर आज निष्ठुर क्यों बन गये हो? वत्स रोहित! क्या यह समय सोने का है? क्या यह समय अपनी माता को छोड़ने का है। क्या यहीं अवस्था तुम्हारे परलोक गमन की है? फिर क्यों पड़े हो? तुम्हारे नेत्र और तुम्हारी आकृति तो वैसी ही है, जैसी सदा मेरी गोद में सोने पर रहा करती थी; फिर आज बोलते क्यों नहीं हो? क्या मुझसे रूठ गये हो? मेरे जीवन धन! यदि तुम रूठ जाओगे, तो इस संसार में इस समय मेरा कौन है, जो मुझे आश्वासन देगा? तुम सदा तो कहा करते थे, कि मैं बड़ा होकर तुम्हें दासीत्व से मुक्त करूँगा, और पिता को भी ढूँढ़ लाऊँगा, परन्तु आज तो बोलते भी नहीं हो! अब तक तो तुमसे यह आशा थी, कि तुम बड़े होकर अपने माता–पिता को दुःख-मुक्त करोगे, परन्तु अब तुम्हारे बिना यह आशा कौन पूरी करेगा? अब कौन मुझे माता-मात। कहकर पुकारेगा? अब, कौन मेरी आँखों के आँसू पोछकर, अपनी तोतली बातों से मुझे हँसावेगा? अब मैं किसका मुख देखकर अपनी आँखें ठंडी करूँगी और अपने दुःख को भूलूँगी? तुम भूखे रहने पर भी, कभी मुझसे न कहते और बिना मुझे साथ लिए न खाते परन्तु अब तो कोई मेरी बात का पूछने वाला भी न रहा। पुत्र रोहित! मैंने तुम्हारे पिता के पुत्र-रत्न को खो दिया। अब, जब वे तुम्हारे विषय में मुझसे पूछेंगे; कि रोहित कहाँ है, तब मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगी? मैं किस हृदय से कहूँगी, कि आपका जीवन-धन और सूर्यवंश का एकमात्र रत्न अब संसार में नहीं है। वत्स रोहित! क्या मैने इसी दिन के लिए तुम्हें पाला-पोसा था। क्या दुष्ट साँप के लिये तुम्हीं डँसने योग्य थे? उस दुष्ट ने तुम्हारे बदले मुझे क्यों न डँस लिया, या अब क्यों नहीं डँस लेता है? मुझे

उसने किस सुख के लिये छोड़ रखा है? मेरे प्राण! तुम इस शरीर में किस सुख की आशा से ठहरे हुए हो? जहाँ रोहित गया है, जिसके लिए तुम ठहरे हुए हो? इस दुःख, पुत्रशोक के भयंकर दुःख से बढ़कर, और कौन सा दुःख है, जिसे अभी और सहना है? इस दुःख से बढ़कर तो संसार में और कोई दुःख नहीं है, फिर तुम इस शरीर को क्यों नहीं छोड़ते? पुत्रशोक के भीषण-दुःख से छुटकारा क्यों नहीं लेते? चलो, तुम भी वहीं चलो, जहाँ रोहित गया है। मैं अबतक सत्य के लिये सब दुःखों को सहती रही लेकिन यह कष्ट मेरे लिये असह्य है। मेरा रोहित जहाँ गया है, वहीं मैं भी जाऊंगी और अवश्य जाऊँगी। अब इस संसार में मैं किस आशा से रहूँ? पुत्र की आशा से ही अबतक हम सब कष्ट सहते रहेः लेकिन आज तो यह आशा भी न रही। जिस पुत्र की आशा के सहारे अबतक मैंने अपने दिन व्यतीत किए, वह पुत्र भी आज स्वप्न के रत्न की तरह छिप गया। मेरे लिए तो आज संसार शून्य है। अब, मुझे इस संसार में रहने की भी क्या आवश्यकता है।

तारा के इस करुण-कन्दन को सुनकर, उनके समीप बहुत से लोग एकत्रित हो गये। तारा के हृदय विदारक विलाप को सुनकर उन लोगों के भी आँसू बहने लगे। सब लोग, तारा से सहानुभूति प्रकट करने लगे। तारा का विलाप सुनकर वन के पशुपक्षियों ने भी खाना-पीना छोड़ दिया और तारा का अनुकरण करने लगे। यह सब कुछ हुआ किन्तु रोहित के मृत शरीर में जीवन का संचार न हुआ। तारा, उसी प्रकार विलाप कर रही थी इतने में ही एक सज्जन आ गये।

सज्जनों की वाणी में न मालूम कौन सी शक्ति होती है। वे संसार के कठिन से कठिन दुःख को भी बात की बात में कम कर देते हैं। उनकी वाणी, दुःखरूपी रोग के लिए रामबाण-औषधि के समान होती है। दुःख में सुख, निराशा में आशा और विपत्ति में सम्पत्ति का संचार कर देना ही सज्जनों की विशेषता है।

वे सज्जन, तारा के समीप आकर कहने लगे देवी तारा! पुत्रशोक से विह्वल होकर, यदि कोई दूसरी स्त्री रोती तब तो आश्चर्य की बात न थी, परन्तु तुम्हारे समान सत्यधारिणी, पुत्र के शोक से विकल हो, यह आश्चर्य की बात है। यदि तुम भी कष्ट सहन में अधीर हो उठोगी, तो फिर दूसरा कोई कैसे धैर्य रख सकता है? यह शरीर, जिसको लिए हुए तुम विलाप कर रही हो, अनित्य तथा क्षणभंगुर है और आत्मा अमर है। फिर तुम शोक किसके लिए कर रही हो? इस नाशवान शरीर से जितना सुकृत्य हो जाय, वहीं अच्छा है। इस बालक ने भी अपने जीवन का अन्त वीरों की तरह किया है और तुमने भी सत्य को इस प्रकार पाला कि आज सारे संसार में तुम्हारी कीर्ति छा रही है। अब क्या पुत्रशोक से व्यथित हो, अपने उस सत्य और धर्म को छोड़ना चाहती हो, जिसकी रक्षा तुमने-इतने कष्ट सहकर की है? जिस सत्य के लिये तुमने राज पाट छोड़ दिया, जिस सत्य के लिये तुमने मजदूरी की, जिस सत्य के लिए बिककर तुमने दासीपना किया, क्या उस सत्य को पुत्रशोक से कातर हो छोड़ दोगी? तुम बिकी हुई हो, तुमको उस ब्राह्मण ने पाँचसौ मुद्राएं देकर मोल लिया है। यदि तुम, पुत्रशोक से कातर हो अपने प्राण त्यांग दोगी, तो उस ब्राह्मण की स्वर्ण मुद्राएं यो ही जायेगी या नहीं? ऐसी अवस्था में तुम्हारा मरना विश्वासघात कहलावेगा और तुम अपने प्रिय धर्म से पतित हो जाओगी। अबतक अपने धर्म की रक्षा की है, अब उसे छोड़ना उचित नहीं है। भद्रे! तुम मरने के लिए भी स्वतन्त्र नहीं हो। अतः अपने इस विचार का परित्याग करो और कातरता को छोड़, धर्म पर ध्यान दो। तुम्हें, तुम्हारे स्वामी ने कुछ ही समय का अवकाश दिया है। उस समय को, यदि पुत्रशोक के विलाप में ही व्यतीत कर दोगी, तो फिर स्वामी-आज्ञा-उल्लंघन की पातकिन हो जाओगी। इसलिए धैर्य धारण करके पुत्र की अन्त्येष्ठि-क्रिया करने का विचार करो। वीर क्षत्राणी, अपने वीर पुत्र के लिए कभी कातर नहीं होती। उसमें भी, तुम सूर्यवंश की कुलवधू हो, दानवीर महाराजा हरिश्चन्द्र की धर्म पत्नी और रोहित जैसे वीर तथा स्वतन्त्रता

प्रिय बालक की माता हो। तुम्हें इस प्रकार शोक करना शोभा नहीं देता। इसके सिवा, शोक करने से दुःख मिट भी तो नहीं सकता। युग-युगान्तर तक शोक करने से भी कष्ट निवारण नहीं होता, फिर शोक करने से ही क्या लाभ? अतः वीर-क्षत्राणी की तरह, धैर्य धारण करके अपने कर्त्तव्य का विचार करो।

सज्जन के इस उपदेश ने, तारा के हृदय में विद्युत का सा प्रभाव किया। वे साश्चर्य विचार करने लगी कि ये सज्जन मुझे कैसे पहिचानते हैं? इन्होंने जितनी भी बाते कहीं है, उनसे प्रकट है, कि ये मुझे अवश्य ही पहचानते हैं। इनका उपदेश भी उचित ही है। वास्तव में मैं दूसरे के यहाँ दासी हूँ। बिना क्रयी की आज्ञा के मैं थोड़ा भी समय व्यय नहीं कर सकती, फिर मरने के लिए कैसे स्वतन्त्र हो सकती हूँ? जिस सत्य की अबतक रक्षा की है, वह सत्य मेरे आत्मघात करने पर कदापि नहीं बच सकता। अब मेरा कर्त्तव्य यही है, कि मैं रोहित की अपेक्षा सत्य को अधिक समझ, रोहित की चिन्ता न करूँ, बल्कि सत्य की चिन्ता करूँ और वे ही कार्य करूँ, जिनके करने से सत्य न जाय।

सज्जन के समझाने से, तारा अपने हृदय में धैर्य लाई। उन्होंने अपने हृदय के दुःख को दबाकर, रोहित की अन्त्येष्ठि क्रिया करने का विचार किया। लेकिन उन्हें ध्यान हुआ कि बिना किसी की सहायता के मैं अकेली स्त्री क्या कर सकूँगी? शमशान कहाँ है, अन्त्येष्टि क्रिया कैसे की जाती है, आदि बातों से मैं अनभिज्ञ हूँ, अतः यदि इन्हीं सज्जन से इस कार्य में सहायता लूँ, तो मेरा कार्य अच्छी तरह चल सकता है।

क्रमशः

मोह रहित मनुष्य दुःख मुक्त है।

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 017
Phone : 2283-6203/6204/0056
Fax : 2283-6643
Resi : 2358-6901,2359-5054

THITTHAYARA
Vol XXXIV No.04
25th July 2010

Registered
No. KOL.RMS / 070/2010-12
R.N.I. 30181/77

सभी प्राणियों के लिये मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ होता है,
क्योंकि बुरे कर्मों का फल निश्चय ही मिलता है
अतः मनुष्य को क्षण भर भी प्रमाद न कर
शुभ कार्यों में तत्पर रहना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria

Rampuria Mansions
17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225